सेल की गाँठ

सेल की गाँठ

नियंता चौधरी आए दिन घर के बजट को संतुलित करने की कोशिश में लगी रहती। बच्चों के संग बाज़ार जाती, तो उनकी पांच फरमाइशों में बमुश्किल दो या तीन पूरे करती। सुपर मार्केट और पास के थोक विक्रेता की दरों का, सामान दर सामान तुलनात्मक अध्ययन करती। इस चक्कर में उसे थोड़े से सामान की खरीद में भी बड़ा वक्त लग जाता। हर समय दिमाग पर ज़ोर देने से उसके सिर के बाल असमय झड़ने लगे थे। मगर स्वयं के स्वास्थ्य को पटरी से गिराकर भी वह गृहस्थी की गाड़ी को पटरी पर बनाए रखना रखना चाहती थी। किस सामान पर कितना ऑफर है, उसे कब खरीदना उचित होगा, हर चीज पर उसकी नज़र रहती।

कमलेश और नियंता दोनों कॉलेज में सहपाठी थे। दोनों का प्रेम विवाह था। दोनों के घरवाले इस शादी के खिलाफ थे। नियंता ने शादी के बाद अपना 'सरनेम' नहीं बदला और कमलेश भी ऐसी किसी परंपरा को पसंद नहीं करता था। कमलेश त्रिपाठी और नियंता चौधरी दोनों तब दिल्ली विश्वविद्यालय के दो अलग-अलग कॉलेजों में एड-हॉक पर पढ़ा रहे थे। इस बीच 'कम्मो' ने जन्म लिया। कमलेश के ना-ना करने के बावजूद नियंता ने कम्मो को भरपूर प्यार करने और समय देने के लिए अपनी एड-हॉक की नौकरी हँसते हँसते छोड़ दी। समय कैसे बीता, पता ही नहीं चल पाया। कम्मो के पैदा होने के कोई दो साल बाद 'कुन्नू' आ गया। जब नियंता के दूसरी बार पाँव भारी हुए, दोनों ने अपनी आगामी संतान को 'भूल की फूल' मानकर सहज ही स्वीकार लिया। बस एक दिन हिदायत नहीं बरती गई और फिर...दोनों इशारों ही इशारों में एक दूसरे को देख हँस पड़े। कमलेश की आँखों में कुछ ऐसी चमक आई कि नियंता किसी लाजवंती सी स्वयं में सिमट गई। उसके होठों पर कमनीयता भरी मुस्कान तैर गई। एक नए बच्चे के यूँ शीघ्र और अप्रत्याशित रूप से आने के लिए अंततः दोनों ने अपना मानस तैयार कर लिया था। और फरवरी माह के अंतिम रविवार को जब कुन्नू पैदा हुआ तो कमलेश ने नियंता के मोटे-मोटे दूधिया गालों से अपने गेंहुए गाल को सटाते हुए और उसकी बाईं बाजू पर चिकोटी काटते हुए कहा, 'क्यों जी नीतू, तुम तो बड़ी फर्टाइल निकली'। कमलेश प्यार के क्षणों में नियंता को नीतू कहा करता था।

नियंता भी कहाँ चुप रहनेवाली थी, "सब तुम्हारा ही किया-धरा है जनाब। उस रात तुम न यूँ बेताब होते और न मुझे इतनी जल्दी फिर से.."। नियंता ने अपने बेटे की ओर निहारा। वह उसकी ओर टुकुर टुकुर देख रहा था। उसकी मोहक छवि पर वह अपना सबकुछ लुटाने को तैयार थी। अपनी खुशी, अपना चैन, अपना स्वास्थ्य सब कुछ। अंदर की ममता रह-रहकर हिचकोलें मार रही थीं। वह अपने सारे कष्ट भूल चुकी थी। उसे स्वयं और कमलेश पर भरोसा था कि दोनों मिलकर संभाल लेंगे दोनों बच्चों को।

नियंता हँसते हुए बोली, "चलो जो होता है, अच्छे के लिए होता है। दोनों बच्चों को एक-दूसरे की कंपनी मिल जाएगी। फिर एक साथ हँसते-खेलते दोनों पल भी जाएंगे"।